BULLETIN - AAM KE KIT PRABANDHAN

BULLETIN - AAM KE KIT PRABANDHAN

आम के प्रमुख कीट एवं उनका एकीकृत प्रबधन

आम को फलों को राजा कहा जाता है परंतु आम की फसल की पैदावार को निम्नलिखित कीट मुख्य रूप से प्रभावित करते है।

1. मिलीबग – इस कीट की शिशु एवं प्रौढ दोनो ही अवस्थाएं फसल को नुकसान पहुंचाती हैं। इस कीट के शिशु चपटे,अंडाकार व मादाएं पंखहीन होती हैं, तथा शरीर 4–5 मि.मी. लंबा व सफेद पाऊडर से ढका हुआ होता है। ये कीट समूहों में रहकर कोमल

टहनियों का रस चूसते हैं जिससे टहनियां व बढ़ते हुए फल सुखने लगते हैं।

2. तनाछेदक – इस कीट की भृंग (शिशु) अवस्था फसल को नुकसान पहुंचाती है, पूर्ण विकसित शिशु कीट लगभग 60 मि.मी. लंबा पीलापन लिये हुए सफेद रंग का होता है। इसका सिर हरे रंग का व जबड़े काफी मजबूत होते हैं। यह कीट तने व शाखाओं के अंदर सुरंग बनाकर अंदर ही अंदर खाता है, जिससे प्रकोपित शाखाओं या संपूर्ण पौधे के मरने की संभावना रहती है।

3. फुदका – शिशु एवं प्रौढ दोनो ही अवस्थाएं इस कीट की फसल को नुकसान पहुंचाती हैं, पूर्व विकसित प्रौढ़ कीट लगभग 6 मि.मि. लंबे तिकोने आकार वाले हल्के भूरे रंग के होते हैं, यह कीट पुष्पक्रम व नई कोपलों से रस चूसते हैं, तथा इनकी

कोशिकाओं में अंडे देते हैं, जिससे पत्तियां व पुष्पक्रम सूखने लगते हैं, इन कीटों द्वारा उत्सर्जित मधुस्त्राव पर काले फंगस विकसित होने के कारण प्रकाश संश्लेषण में बाधा पहुंचाते हैं।

4. छालभक्षी – इस कीट की इल्ली अवस्था फसल को नुकसान पहुंचाती है, पूर्ण विकसित इल्ली लगभग 38 मि.मी. लंबी भूरापन लिये हुए होती है, यह कीट तने में छिद्र बनाकर उसके अंदर रहता है, छिद्र के बाहर तने में विष्ठा के जाल के अंदर छाल को खाता है, इस कीट का आक्रमण होने पर पौधे का परिवहन तंत्र प्रभावित होता है, परिणामस्वरूप पौधे की वृद्धि व फल लगना कम हो जाता है।

5. फल मक्खी – इस कीट की इल्ली, अवस्था फसल के लिये हानिकारक होती है। पूर्ण विकसित इल्ली पीलापन लिए हुए 8.9 मि.मी. लंबी होती है। अंडे से निकली इल्ली फलों के अंदर गुदा को खाकर फलों को खराब कर देती है। प्यूपा बनने से पहले यह फल में छिद्र बनाकर बाहर आता है। तथा जमीन में पहुंचकर प्यूपा बनाता है।

आम मे एकीकृत कीट प्रबधन –

1. सघन रोपणी पद्धति से बाग नही लगाना चाहिए क्योंकि इसमें कीट प्रकोप की आशंका ज्यादा रहती है।
2. वर्षा ऋतु समाप्ति के पश्चात वृक्षों की शाखाओं की कटाई एवं सधाई करें, कटे हिस्सो सहित मुख्य तने मे बोर्डो पेस्ट लगाए।
3. पूरे बाग की वृक्ष सहित चारो ओर निदाई–गुडाई कर उर्वरक दें।
4. वृक्ष की हल्की छालों को निकाल दें क्योंकि तना छेदक के अंडे यहीं दिये जाते हैं।
5. छालमक्खी कीट द्वारा बनाये हुए विष्ठायुक्त जाल को साफ कर छिद्र के भीतर मौजूद इल्ली को लोहे के तार या रसायनिक दवा द्वारा नष्ट कर दें।
6. ग्रब का आक्रमण दिखने पर डाइक्लारोवास दवा का साद्र घोल बनाकर सीरिंज के सहारे तने की सुरंगो में दवा पहुंचाये।
7. मिलीबग का आक्रमण होने पर मुख्य तने पर अल्काथीन की चिकनी पट्टी जिसकी चौडाई 15 – 20 सें.मी. हो लपेटकर कीले लगा दें, जिससे मिलीबग कीट को ऊपर चढने से रोकेगा।
8. बाग में प्रकाश प्रपंच लगाकर कीटों की उपस्थिति व संख्या की निगरानी रखते हुए वयस्क कीटों को नष्ट करते रहे।
9. मिलीबग का प्रकोप नवंबर–दिसबंर माह मे होने पर बचाव हेतु फालीडाल या लिडेंन डस्ट का 250 ग्राम प्रति वृक्ष के हिसाब से वृक्ष के चारो ओर भुरकाव करें।
10. फरवरी – मार्च के महीनों में माहू या फूदका कीट से बचाव के लिये नई कोपलें व फूल आने तथा फल लगने की शुरूआती अवस्था में कमशः मैलाथियान 1.75 मि.ली. व क्विनालफांस 1.50 मि.ली. एवं कार्बारिल 2 ग्राम प्रति लिटर पानी में घोलकर 10 लीटर प्रति वृक्ष के हिसाब से छिड़काव करें।
11. फल पकने की अवस्था में मिथाइल यूजेनाल के घोल में डूबे कार्क के टुकड़े को प्लास्टिक की बोतल मे लगाकर बाग में लटकाएं इससे फल मक्खी आकर्षित होकर एकत्र होगी।